Address by The Speaker

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, हमारा यह संसद भवन स्वतंत्रता प्राप्ति की ऐतिहासिक घड़ी से लेकर भारत के संविधान निर्माण की सम्पूर्ण प्रक्रिया और उसके साथ ही हमारे आधुनिक राष्ट्र की गौरवशाली लोकतांत्रिक यात्रा का साक्षी रहा है। स्वतंत्र भारत के प्रथम लोक सभा के अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकर जी ने 15 मई, 1952 को अपना पदभार ग्रहण किया था। देश की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था के प्रथम अध्यक्ष के रूप में उन्होंने नियम समिति, विशेषाधिकार समिति, कार्य मंत्रणा समिति सहित कई अन्य संसदीय समितियों की स्थापना की और सदन के अंदर उच्चतम परम्पराओं की नींव रखी। इस सदन में अभी तक मेरे से पूर्व 16 माननीय अध्यक्ष सदन के आसन पर विराजमान हुए और उन सभी ने श्रेष्ठ परंपराएं स्थापित कीं।

माननीय सदस्यगण, इस कक्ष के माध्यम से अब तक 15 माननीय प्रधान मंत्रियों का नेतृत्व प्राप्त हुआ । उन सभी ने अपने विचारों और कार्यों से देश की दशा और दिशा तय की है । यह सदन संवाद संस्कृति का जीवंत प्रतीक रहा है । विभिन्न दलों के बीच तथा सहमति-असहमति के बीच पिछले 75 वर्षों में देश हित में सामूहिकता से निर्णय लिए गए । संसदीय विचार-विमर्श की पद्धति से देश की जनता के जीवन में सामाजिक, आर्थिक बदलाव के लिए कानून बनाए गए । आपदा और संकट के समय सदन ने एकजुटता और प्रतिबद्धता से उसका सामना किया । आज इस कक्ष में कार्यवाही का अंतिम दिन है । हमारे देश की लोकतांत्रिक यात्रा में इस भवन का योगदान अतुलनीय है । आज के बाद सदन की कार्यवाही नए भवन में संचालित होगी । हम नए भवन में नई आशाओं, नई उम्मीदों के साथ प्रवेश करेंगे । मुझे विश्वास है कि हमारी संसद के नए भवन में हमारा लोकतंत्र नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा ।

अब मैं माननीय प्रधान मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि वे अपने विचारों को व्यक्त करें ।